IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

हिंदी बालकाव्य में राष्ट्रीय चेतना के स्वर

शोधार्थी वर्षा जादौन
जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर
मार्गदर्शिका
प्राचार्य डॉ. ज्योती उपाध्याय
वी.आर.जी. गर्ल्स कॉलेज,
मुरार ग्वालियर

बालक देश व समाज की रीढ़ है। उनका समुचित विकास ही देश का विकास है। बच्चे प्राकृतिक रूप से निश्छल, निद्वन्द्व एवं मासूम होते हैं। व कुमार की गीली मिट्टी की तरह है जिन्हें थपकाकर, सहलाकर या हल्की चपत लगाकर समुचित आकार में गढा जा सकता है। यही कार्य एक बाल साहित्यकार भी करता है। कहा गया है–

''गुरु कुम्हार शिशु कुंभ है,

गिन–गिन काढे खोट।

अंतर हाथ सहार दे,

बाहरे मारे चोट।।''[1]

बच्चों की भावना, रुचि, भाषा, मनोवृत्ति को परखकर लिखा गया मनोनुकूल साहित्य ही बाल साहित्य की श्रेणी में आता है।

राष्ट्र के प्रति प्रेम या राष्ट्रभक्ति केवल सीमा की सुरक्षा या युद्ध के समय ही प्रदर्शित नहीं होती बल्कि राष्ट्र के बहुआयामी विकास, सतत शांति एवं प्रगति, मातृत्व, सद्भावना एवं राष्ट्रीय भावना के साथ अभिव्यक्त होती है। देश की शिक्षा, पर्यावरण सहित, राष्ट्रीय धरोहरों तथा राष्ट्रीय संस्कृति का सम्मान एवं स्वाभिमान भी इस अभिव्यक्ति में शामिल है। बचपन जीवन का स्वर्णिमकाल है। इस काल में बच्चों को जो अमूल्य बातें बताई जाती हैं, वे विचार बीज के रूप में बच्चों के संस्कार बन जाते हैं। उनके भीतर एक अदश्य भविष्य मचल रहा होता है। बालकों के भीतर अनंत शक्तियां छिपी रहती हैं। शांति, प्रेम, करूणा, सत्य, अहिंसा जैसे मानवीय गुणों के साथ–साथ ही बच्चों में राष्ट्रीयता की भावना का अंकुर फ्टता है।

स्वातंत्र्यपूर्व बाल साहित्य की दृष्टि मिशनरी थी। बंकिम चंद्र चटर्जी रचित 'वंदे मातरम' एक गीत या गान नहीं एक पूरी राष्ट्रीयता का आह्वान है। सैर म्हम्मद इकबाल का 'सारे जहां से अच्छा हिंदोस्तां हमारा' आदि गीतों ने कभी पूरे देश को राष्ट्रीयता के भावों से भर दिया था। यह बाल साहित्य का ही प्रभाव था कि 21 वर्ष की आयु में ही सरदार भगत सिंह ने देश की आजादी की खातिर फांसी का फंदा चूम लिया था।

देश प्रेम और राष्ट्रीयता हिंदी बाल काव्य का प्रारंभ से ही प्रमुख विषय रहा है। राष्ट्रीय चेतना के लिये प्रभूत मात्रा में राष्ट्रीय काव्य रचा गया है। यथा–

''जागो उठो सबेरा आया

कितने नये संदेशे लाया

पक्षी कब से बोल रहे हैं

फूल किवाड़े खोल रहे हैं

किरणें घर–घर घूम रही है

सबकी आंखें चूम रही है

तुम भी जागो आंखें खोले।

खेलो कूदो हंसकर बोलो।'[2]

प्रेरणा मूलक राष्ट्रीय काव्य हर देश में बच्चों को परिस्थितियों से संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। हिंदी में भी बच्चों को निराशा मुक्त रखने, उनमें साहस और आत्मविश्वास जगाने, हर बाधा में हंसते–हंसते जीवन बिताने, राष्ट्र के लिये कुर्बानी देने और एक अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा देने वाला काव्य प्रचुर मात्रा में लिखा गया है।

स्वातंत्र्यपूर्व युग में विदेशियों के प्रति आक्रोश और देश प्रेम की लहर पूरे देश में फैली हुई थी। राष्ट्रीय चेतना से ओत प्रोत देशप्रेम का काव्य पराधीनता से मुक्त होने की प्रेरणा देता है। राष्ट्रीय चेतना की कविताओं में देश का गुणगान, राष्ट्रीय एकता, महानता और प्राकृतिक संपन्नता एवं सौंदर्य का वर्णन किया जाता है। हमारा देश कविता में देश प्रेमी एवं राष्ट्रीय चेतना का स्वर कुछ इस प्रकार मुखर हुआ है। यथा–

''अच्छा–अच्छा प्यारा प्यारा

देश हमारा राज दुलारा

प्यारा है निज देश हमारा

राज दुलारा,

सबसे न्यारा आंख का तारा

प्यारा है निज देश हमारा

चांदी इसमें, सोना इसमें,

लोहा इसमें, ताम्बर इसमें

मस्जिद इसमें, मंदिर इसमें,

तरह–तरह की नदियां इसमें

सबसे प्यारा आंख का तारा

प्यार है निज देश हमारा।'[3]

स्वातंत्र्य पूर्व बालकाव्य की विकास यात्रा बड़ी सुखद और आशा पद रही। बिना किसी पूर्व परंपरा के उस युग में इतना अच्छा बालकाव्य लिखा गया, यह इस युग की एक अपूर्व विशेषता थी। अनपढ़पन और

अपरिपक्वता में भी एवं कलात्मक जीवंतता इस बालकाव्य को उत्कृष्टता प्रदान करती है। स्वातंत्र्ययपूर्व रचित बालकाव्य ने ही भविष्य के बालकाव्य की आधारभूत पृष्ठभूमि तैयार की थी।

स्वतंत्रता के बाद देश में नई चेतना का विकास हुआ और सरोकार भी बदले। निरंकार देव सेवक, हरिकृष्ण देवसर, सोहनलाल द्विवेदी, द्वारिका प्रसाद, माहेश्वरी, श्री प्रसाद, डॉ. राष्ट्रबंधु, चंद्रपाल सिंह मयंक, विनोद चंद पांडेय, सुरेंद्र विक्रम, सूर्यकुमार पांडेय, हरिऔध, लल्ली प्रसाद पाण्डेय, ठाकुर श्रीनाथ सिंह, शंभूनाथ सक्सेना, शकुंतला सिरोठिया आदि ने बालसाहित्य में राष्ट्रभक्ति एवं मनोवैज्ञानिक रचनाएं लिखी। सोहनलाल द्विवेदी ने बाल कविता लिखकर देश प्रेम की भावना कुछ इस प्रकार अभिव्यक्त कि–

''हम सब बाल सिपाही

मां के घर के पहरेदार हैं।

कोई हाथ उठाये मां पर,

तो नंगी तलवार है।''[4]

इसी कथ्य को कुछ रूपांतरण के साथ डॉ. श्री प्रसाद ने कुछ इस तरह व्यक्त किया है–

''नन्हे नन्हे इन कंधों पर,

रक्खा जायेगा सब भार।

हम भारत के वीर सिपाही,

हम भारत के पहरेदार।''[5]

इसी देशभक्ति एवं राष्ट्रीय एकता के भाव को चंद्रपाल सिंह यादव मयंक ने कुछ इस तरह स्वर दिया है–

''एक बनेंगे, नेक बनेंगे

भारत के बच्चे सारे।

वीर बनेंगे, धीर बनेंगे,

मां की आंखों के तारे।।''[6]

शंकर सुल्तानपुरी का देश की मिट्टी के प्रति प्रेम कुछ इस तरह उमड़ता है–

''युगो युगो से वंदनीय है माटी हिंदुस्तान की

यह माटी है भारत मां के वीरों के बलिदान की।''[7]

इन बलगीतों ने जाति, धर्म, क्षेत्र, भाषा और संकीर्ण भावों से मुक्त कर परस्पर प्रेम, एकता, सहयोग और राष्ट्र के प्रति सम्मान का भाव जगाने में अपनी ऐतिहासिक भूमिका अदा की। सुरेश कौशिक, माया वर्मा, आजाद रामपुरी, राम भरोसे गुप्त राकेश, जगदीश तोमर, नरेंद्र नाथ कहा, अवध किशोर सक्सेना, आचार्य भगवत दुबे, नरेश सक्सेना, सीताराम गुप्त, दिनेश, दिविक रमेश, उषा यादव, डॉ. फहीम अहमद, रोहिताश्व अस्थाना, डॉ. परशुराम शुक्ल, रामनिवास मानव, शकुंतला कालरा, गोविंद भारद्वाज, महेंद्र भट्ट, जानकी प्रसाद विवश आदि कवियों द्वारा स्वातंत्र्योत्तर कालखंड में रचित बाल साहित्य का राष्ट्रीय भावना एवं देशभक्ति जागृत करने की दृष्टि से अविस्मरणीय योगदान रहा है।

देश प्रेम की भावना से सराबोर कुसुम अग्रवाल की यह कविता सचमुच अद्भुत एवं अनुकरणीय हैं–

''भारत सुंदर फुलवारी है, हम सब फूल अनेक हैं।

रूप भले ही अलग–अलग हो, भारतवासी एक हैं।'[8]

डॉ. मेजर शक्ति राज की इन पंक्तियों में भी देश प्रेम का अनूठा स्वर गूंज रहा है–

''देश की बातें कहते–कहते

दादी हमसे करती प्यार

बेटे नहीं बिखरने देना

देश की आजादी के तार।'[9]

हाल ही में प्रकाशित संजीव जायसवाल का देशभक्ति से ओत प्रोत बाल उपन्यास, मिट्टी मेरे देश की, नेशनल बुक ट्रस्ट से प्रकाशित हुआ है। इसके माध्यम से भी राष्ट्रीय भावना पुष्पित एवं पल्लवित हुई है।

इसी तरह लोकमंगल पत्रिका (ग्वालियर) के अमत वर्ष विशेषांक में डॉ. भगवान स्वरूप चैतन्य का बाल उपन्यास 'नीतू की पाठशाला' प्रकाशित हुआ है जो स्वाधीनता के संघर्ष और क्रांतिकारी युवाओं की देशभक्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करता है। इसी तरह कथाओं एवं लघु कथाओं, बाल नाटकों एकांकी एवं विविध रचनाओं के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर काल बाल साहित्य की तेज रफ्तार से प्रगति हुई है। एक सुसंस्कृत एवं स्वस्थ राष्ट्र के निर्माण में प्रेरक बाल साहित्य एवं देशभक्ति पूर्ण बाल साहित्य की भूमिका को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता।

''बच्चों के लिये राष्ट्र प्रेम की कविताओं का निस्सीम खजाना हिंदी बाल कविता की जादुई झोली में है तो जरूर, पर उसमें स्थाई महत्व की सामग्री बहुत कम है।'[10] प्रकाश मनु ने लिखा है– *''देश पर बहुत ढूंढ किस्म की देशभक्ति परक कविताएं मैंने पढी है। लेकिन उनमें डॉ. शेरजंग गर्ग की देश कविता सबसे अलग है।'*[11] यह कविता बहुत खूबसूरत ढंग से यह समझा देती है कि–

''देश नहीं होता बंदूके, देश नहीं होता है फौज, देश सिर्फ पहाड़ और नदियों का नाम भी नहीं है। जहाँ लोग प्यार से हिल मिलकर रहते हों, उसका नाम देश है।'[12] कविवर सोहन लाल द्विवेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखनलाल चतुर्वेदी, रामधारी सिंह दिनकर की राष्ट्रभक्ति परक बाल रचनाएं इन ऋषि कवियों की तपस्या एवं साधना का अंश बनकर जन्मी है।

निरंकार देवसेवक ने एक स्थान पर लिखा है– बच्चा बड़ों के मुख से देश या राष्ट्र बोला हुआ सुनता है पर वास्तव में वह उसमें कोई ऊर्जा अपने मन में निश्चित नहीं कर पाता। छोटे बच्चों के स्कूलों में भी बच्चों से विशेष अवसरों पर जन गण मन गाने के लिये कहा जाता है और उसे व तोते की तरह रट कर गा लेते हैं, पर व बिल्कुल ही नहीं समझ पाते कि उत्कल बंग और उच्छल जलधि तरंग क्या है।

बच्चे राष्ट्र की अवधारणा को आत्मसात कर पाये इसके लिये व्यावहारिक जीवन में इसका उदाहरण प्रस्तुत किया जाना आवश्यक है। देश शब्द का अर्थ प्रायः लोग भौगोलिक सीमाओं से घिरे भूखंड से करते हैं, जबकि देश में रहने वाले सभी निवासियों का हिल मिलकर एकता, प्रेम और भाईचार के साथ देश हित में सदा एक जुट रहना उन्हें सिखाया जाना चाहिये। किसी भी धर्म, जाति, भाषा, वर्ग, वर्ण, संप्रदाय, खान–पान, भाषा को अपनाने वाले निवासी के साथ उसका भाईचारे का नाता है, लेकिन घर की कामवाली बाई के बच्चे के साथ यदि बच्चे को घलने मिलने न दिया जाय तो ऐसी स्थिति में बच्चे का बाल–मन क्या बिम्ब, ग्रहण करेगा? महापुरुषों के जीवन चरित्र की कहानियाँ घर में तथा स्कूल में निरंतर बच्चों को सुनाई जानी चाहिये। बच्चों के खिलौने भी राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा दे सकते हैं। 'तिरंगा झंडा' क्यों फहराते हैं, इसके लिये जवानों ने क्यों प्राण न्योछावर कर दिये आदि बातें बच्चों को रोचक ढंग से बताई जानी चाहिये। बाल साहित्य में राष्ट्रीयता की परंपरा का विकास तभी होगा। बच्चों में सृजनात्मक की खोज भी की जानी चाहिये। बच्चे माँ से सर्वाधिक जुड़े रहते हैं। मा के रूप देश की 'मातृभूमि' के रूप में जन्म भूमि के रूप में कल्पना स राष्ट्र की अवधारणा सुदढ़ होती है। सरल और रोचक भाषा में ही बाल साहित्य में राष्ट्रीय भावना का समावेश तभी हो बच्चों को राष्ट्र की परिभाषा समझाइ जा सकती है।

कवि राम किशोर तिवारी अपनी 'भारत माता' शीर्षक कविता में लिखते हैं–

''हरा भरा है माँ का आंचल, नदी झील के जड़ सितारे।

दमक दमक कर लुभा रहे हैं, चमक रहे ज्यों नभ के तारे।''[13]

केवल गौरवशाली अतीत से ही नहीं बच्चों के वर्तमान से भी उसे जोड़ा जाना चाहिये। तभी वह देश के नव निर्माण में भागीदार बन सकेगा। सोहनलाल द्विवेदी जी की य पंक्तियां देखिये–

''देखा नहीं हाथ की रेखा, पल्टो मत पन्ना पोथी।

मीन–मेष कुछ कर न सकेगा, ये सारी बातें थोथी।

कभी निकम्मे बन मत बैठो, उठो बढ़ो कुछ काम करो।

सब कुछ कर सकते हो तम, मत ईश्वर को बदनाम करो।''[14]

बच्चों के मन में राष्ट्रीय भावना जगाने के लिये राष्ट्रध्वज की महत्वपूर्ण भूमिका स्वयं सिद्ध है। राष्ट्रीय पर्व 15 अगस्त 26 जनवरी पर बच्चों के हृदय में उल्लास देखते ही बनता है। कविवर पार्षद जी का झंडा गीत विजयी विश्व तिरंगा प्यारा, झंडा ऊंचा रहे हमारा गाते हुए बच्चे जब तिरंगा हाथ में लेकर निकलते हैं तो उनके भीतर देशप्रेम की भावना का ज्वार सा उमड़ता है। वीरों का कैसा हो बसंत कविता में सुभद्रा जी ने बाल हृदय में वीर भावना जगाई है। देश की एकता और अखंडता के प्रति अपने भाव प्रकट करते हुए आर सो प्रसाद सिंह संपूर्ण कानून को ही एकता का प्रतीक मानते हैं तो द्वारिका प्रसाद माहश्वर जी ने हम सब सुमन एक उपवन के कहकर सारे भेदभाव हो मिटा दिये हैं। कवि राम वचन सिंह की य पंक्तियां देश की राष्ट्रीय एकता की निर्देशक हैं–

''स्नेहमयी है भारत माता, हम इसकी संतान।

हिंदू, मुस्लिम, सिख, पारसी, जैन बौद्ध क्रिस्तान।

माता प्यार लुटाती सब पर, माँ पर सब कुर्बान।

हम इसकी संतान।''[15]

प्रकाश मन, कामना करते हैं–

''महके हुए गुलाबों जैसा, होगा महको अपना देश।

जब सब बच्चे अच्छे होंगे, होगा अच्छा अपना देश।''[16]

निष्कर्ष रूप म कह सकते हैं कि बाल साहित्य में राष्ट्रीय चेतना देश व समाज की खुशहालो तथा उज्जवल भविष्य की बुनियाद तैयार करती है। वंदे मातरम को आत्मसात करके ही बच्चे राष्ट्रप्रेम के रंग में रंग सकते हैं। आजादी के बाद इसे बनाये रखने की एक बड़ी जिम्मेदारी हम सब की है।

संदर्भ संकेत

[1] बाल भारती (1969) पाठ्यपुस्तक निगम (मध्य प्रदेश), पृष्ठ 14

[2] मोहन माला, रामनरेश त्रिपाठी (1949) इलाहाबाद, पृश्ठ– 61

[3] हमारा देश, सैय्यद कासिम अली, बालसखा, 1944, पृष्ठ 19

[4] मानस संगम (कानपुर) 1969 संपादक बद्रीनारायण तिवारी, कवि सोहनलाल द्विवेदी, पृष्ठ 41

[5] हिंदी बाल साहित्य की रूपरेखा, डॉ. श्री प्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2007, पृष्ठ 34

[6] हिंदी बाल साहित्य की रूपरेखा, कवि चंद्रपाल सिंह यादव मयंक, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2007, पृश्ठ– 49

[7] हिंदी बाल साहित्य की रूपरेखा, कवि शंकर सुल्तानपुरी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2007, पृष्ठ 45

[8] हिंदी बाल साहित्य की रूपरेखा, कवयित्री कुसुम अग्रवाल लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2007, पृष्ठ 43

[9] हिंदी बाल साहित्य की रूपरेखा, कवि डॉ. मेजर शक्ति राज, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2007, पृष्ठ 39

[10] हिंदी बाल साहित्य और बाल विमर्श, उषा यादव, राज किशोर सिंह, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2018, पृश्ठ–81

[11] हिंदी बाल साहित्य और बाल विमर्श, उषा यादव, राज किशोर सिंह, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2018, पृश्ठ–84

[12] हिंदी बाल साहित्य और बाल विमर्श, कवि शेरजंग गर्ग, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2018, पृष्ठ 85

[13] हिंदी बाल साहित्य और बाल विमर्श, कवि राम किशोर तिवारी, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण–2007, पृष्ठ 45

[14] मानस संगम (कानपुर) 1969 संपादक बद्रीनारायण तिवारी, कवि सोहनलाल द्विवेदी, पृष्ठ 45

[15] हिंदी बाल साहित्य की रूपरेखा, डॉ. श्री प्रसाद, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण 2007, पृष्ठ 140

[16] बाल साहित्य विशेषांक, साक्षात्कार (2012), अंक 195, संपादक त्रिभुवन नाथ शुक्ल, पृश्ठ–59